सभी आदरणीय सभा गण को मेरा प्रणाम, आज गांधी जयंती के अति महत्वपूर्ण है दिवस के अवसर पर हम एकत्रित हुए है। मुझे महात्मा गांधी पर दो शब्द कहने के अनुमति देने के लिए आप सब का धन्यवाद।

जैसा कि हम सब जानते है महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात राज्य के पोरबंदर जिले में हुआ था। उनके दादाजी का नाम उत्तमचंद गांधी था जो गुजरात के राजघराने में दीवान का काम करते थे। इसके बाद जब उस इलाके में अंग्रेजों का शासन शुरू हुआ तब महात्मा गांधी के पिता को गुजरात के राजकोट के कोर्ट में दीवान के रूप में ट्रांसफर कर दिया गया था जहां वह कार्य करते थे। महात्मा गांधी कब पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था, जिसमें उनके पिता का नाम करमचंद गांधी था, उनकी माता का नाम पुतलीबाई था। महात्मा गांधी का विवाह महज 12 वर्ष की आयु में उनसे 1 साल बड़ी 13 वर्ष की कस्तूरबा गांधी से कर दिया गया था। इसके बाद महात्मा गांधी ने राजकोट से अपनी प्रारंभिक शिक्षा को पूर्ण किया और लंदन बैरिस्टर की पढ़ाई करने चले गए थे।

आज के जमाने में जिस पढ़ाई को हम वकालत की पढ़ाई कहते है उस जमाने में उसे बैरिस्टर की पढ़ाई कहते थे। वहां से वकालत करने के बाद वह भारत आकर अपनी पत्नी के साथ मुंबई में बस गए थे जहां वह एक कोर्ट में वकील के तौर पर प्रैक्टिस कर रहे थे। कुछ सालों तक प्रैक्टिस करने के बाद उन्हें दक्षिण अफ्रीका के एक अमीर सेठ का केस लड़ने का मौका मिला। उस केस के लिए उन्हें दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा और दक्षिण अफ्रीका में हो रहे नस्लभेद को देखकर उन्होंने आंदोलन करने का विचार बनाया। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह आंदोलन इतना सफल हुआ कि पहली बार भारतीय देश के किसी व्यक्ति के दबाव में आकर अंग्रेज सरकार को अपने कानून में बदलाव करना पड़ा था।

इसके बाद महात्मा गांधी भारत की अखबारों की सुर्खियों में छा गए थे। कुल 21 साल तक महात्मा गांधी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ दक्षिण अफ्रीका में रहे जिसके बाद 9 जनवरी 1915 को भारत वापस लौटे। अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के निर्देश पर वह भारत आए थे और अंग्रेजों को यहां से भगाने का विचार बना रहे थे। मगर उनके गुरु गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें सलाह दी कि 1 साल तक भारत को पूरे अच्छे से घूम कर अंग्रेजों की गतिविधि को वहां समझने का प्रयास किया जाए। इसके बाद महात्मा गांधी 1 साल तक भारत भ्रमण करते रहे और अंत में सब कुछ समझने के बाद 1917 में बिहार के चंपारण जिले से अपने आंदोलन को शुरू किया था।

महात्मा गांधी अहिंसा और सत्य के मार्ग पर लोगों को चलने का उपदेश दे रहे थे उनका मानना था कि अगर सत्य की राह पर अहिंसा का पालन करते हुए चलेंगे तो दुनिया की कोई भी शक्ति आपको किसी भी तरह से हरा नहीं कर सकती है। महात्मा गांधी ने अपने पूरे जीवन काल में 8 से अधिक अलग-अलग प्रकार के आंदोलनों में हिस्सा लिया और भारत को अंग्रेजों से मुक्त करवाया। महात्मा गांधी सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन, दांडी मार्च, जैसे अलग-अलग प्रकार के आंदोलनों को पूरे भारतवर्ष में फैला पाए।

4 जून 1944 को रेडियो पर सुभाष चंद्र बोस से बात करने के दौरान महात्मा गांधी को पहली बार राष्ट्रपिता की उपाधि सुभाष चंद्र बोस ने दी थी। इसके बाद हमारा देश आजाद हुआ और हर साल 2 अक्टूबर को राष्ट्रीय अहिंसा दिवस गांधी जयंती के रूप में मनाने की परंपरा को शुरू किया गया। महात्मा गांधी को नोबेल पीस प्राइज के लिए नॉमिनेट किया गया था मगर किसी कारणवश उन्हें यह पुरस्कार नहीं दिया गया। महात्मा गांधी का जीवन बहुत ही संघर्ष में रहा उन्होंने अपनी जीवनी द एक्सपेरिमेंट विथ ट्रुथ में बताया कि किस प्रकार उन्होंने भारत के एक जगह से बैठकर बिना इंटरनेट और मोबाइल के पूरे भारत के लोगों को संचालित किया और विश्व भर में एक बेहतरीन वक्ता और प्रचलित नेता के रूप में खुद को प्रचारित किया।

हमें महात्मा गांधी सदैव याद रहेंगे उनके अतुलनीय कार्य की वजह से आज हिंदुस्तान आजाद हो पाया है। हम महात्मा गांधी के बलिदान और उनके कार्य कुशलता को कभी नहीं भूल पाएंगे इसीलिए किसी कवि ने कहा है कि
"दे दी हमे आजादी बिना खड़क बिना ढाल,
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।"